

प्रसिद्ध सचिन
श्रीकृष्ण कथाएं



MAPLE KIDS

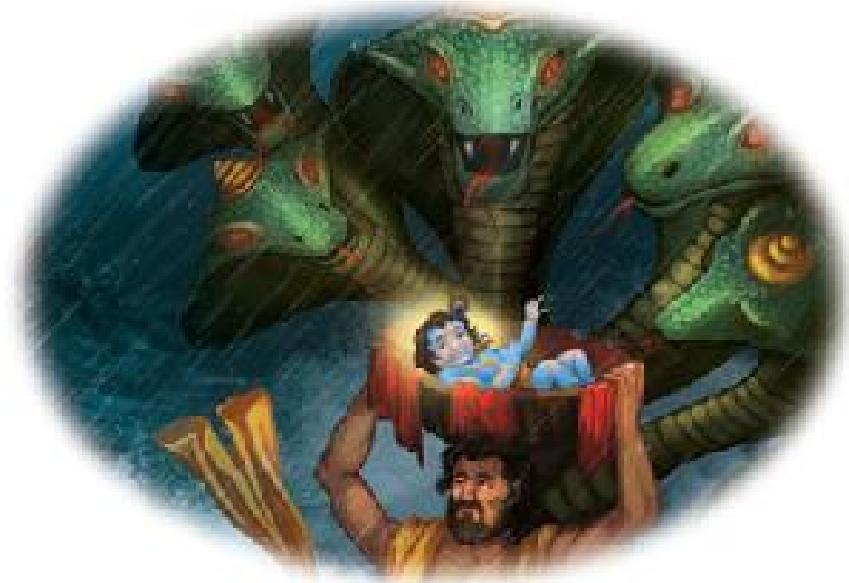
प्रसिद्ध सचिव
श्रीकृष्ण कथाएँ



प्रसिद्ध

सचित्र

श्रीकृष्ण कथाएँ



Maple Press

विषय-सूची

1. कंस-देवकी
2. कृष्ण जन्म
3. श्रीकृष्ण और पूतना राक्षसी
4. त्रिनवरता की मृत्यु
5. शरारती बालक श्रीकृष्ण
6. दामोदरः कृष्ण को बांधा
7. यमला अर्जुन का पे
8. वृदावन में श्रीकृष्ण
9. बकासुर राक्षस
10. जहरीला सांप अगासुर
11. धेनूकासुर राक्षस
12. ब्रह्मदेव की शरारत
13. कालिया नाग
14. प्रालम्बा राक्षस
15. गोवर्धन पर्वत और भगवान इंद्र
16. श्रीकृष्ण मथुरा में

17. कंस का वध

कंस-देवकी

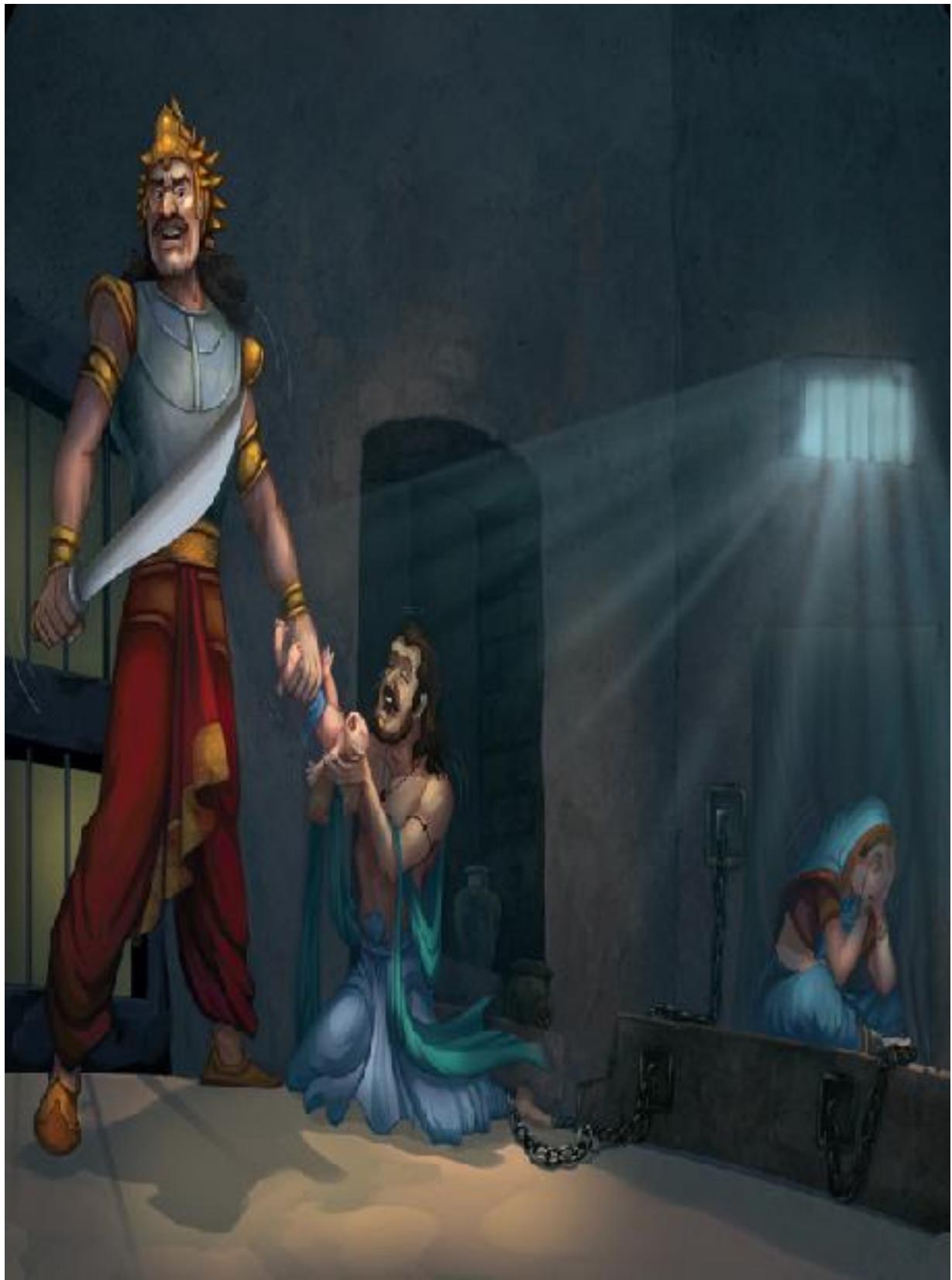
बहुत समय पहले, मथुरा में राजा उग्रसेन नामक राजा था। उसका कंस नाम का एक पुत्र था। जो बहुत बृद्ध था। राजा बनने के लिए कंस ने राक्षसों की मदद से अपने पिता को गद्दी से उतारकर कैदी बना लिया और स्वयं राजा बन गया। उसकी देवकी नाम की एक चचेरी बहन थी, जिसे वह बहुत ज्यादा प्यार करता था। उसका विवाह राजकुमार वासुदेव से हुआ था। विवाह के बाद जब कंस उन्हें रथ में बैठाकर अपने महल की ओर जा रहा था, उस समय एक आकाशवाणी हुई। आकाशवाणी ने कंस से कहा, “ऐ, मूर्ख! जिस देवकी को तुम अपने साथ लेकर आये हो, उसकी आठवीं संतान तुम्हारा वध कर देगी।” यह आकाशवाणी सुनते ही कंस घबरा गया। उसने अपनी बहन को बालों से पकड़ लिया और उसे मारने के लिए तलवार उठा ली। यह देखकर वासुदेव ने कंस को शान्त करने की कोशिश की और नम्र स्वर में उससे कहने लगे, “ओ कंस! तुम्हारी प्रशंसा बै-बै-योद्धाओं द्वारा की जाती है। तुम एक स्त्री को कैसे मार सकते हो और वह भी अपनी नव-विवाहिता बहन को? ऐसा करने से तुम्हें बहुत अपयश मिलेगा। कृपया करके उसे नहीं मारो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं अपनी सारी संतानें पैदा होते ही तुम्हें दे दूँगा।”

वासुदेव अपने वचन के पक्के थे यह बात कंस जानता था, इसलिए कंस ने देवकी को मारने का इरादा त्याग दिया। वासुदेव बहुत खुश हुए और महल पहुंच गये। थोड़े दिनों बाद जब उनकी पहली संतान ने जन्म लिया, तो वासुदेव ने उसे कंस को दे दिया। वासुदेव का विनम्र स्वभाव देखकर, कंस ने सोचा, मैं इस बच्चे को कैसे मारूँ। आकाशवाणी ने कहा था कि सिर्फ देवकी का आंठवा बच्चा ही मुझे मारेगा।



उसी समय अचानक नारद मुनि कंस से मिलने आए और कहा, “कंस सारे देवता तुम्हें मारना चाहते हैं। कृपया करके इस बच्चे को नहीं छो जो, क्योंकि यह भी तुम्हें नुकसान पहुंचा सकता है।” यह शब्द सुनते ही कंस डर गया। उसने वासुदेव से बच्चे को छीनकर पत्थर पर पटक दिया।

उसने वासुदेव और देवकी को कारागार में डाल दिया और उनकी छः संतानों को एक-एक करके मार दिया। जब देवकी ने सातवीं संतान को गर्भ में धारण किया, तब उसे आशा थी कि यह बच्चा कंस के निर्दयी हाथों से बच जायेगा। देवकी ईश्वर का आशीर्वाद महसूस करके बहुत प्रसन्न थी। परन्तु वह यह सोच कर बहुत ज्यादा डर जाती थी कि कंस इसे भी मार देगा।



स्वर्ग में, भगवान ने योगमाया को अपनी शक्ति को दिखाने का आदेश देते हुए कहा, "ओ देवी माया ! वासुदेव की दूसरी पत्नी रोहणी गोकुल में रहती है। वहां का राजा नंद हैं और यशोदा उनकी पत्नी हैं। वह जगह मथुरा से दूर नहीं है। तुम देवकी के पेट से शिशु को निकाल कर रोहिणी के पेट में रख दो। इस तरह देवकी का पुत्र रोहिणी के पेट से जन्म लेगा और उसका नाम बलराम होगा। तुम्हें नंद की पत्नी, यशोदा के पेट से जन्म लेना होगा।" उन्होंने योगमाया से यह भी कहा, "तुम्हें भी देवी दुर्गा की तरह पूजा जायेगा।" योगमाया धरती पर गई और उन्होंने भगवान के आदेशानुसार ही कार्य किया। हर कोई सोचता था कि देवकी का गर्भपात हो गया था। सब लोग शौक मनाते थे तथा उसे सांत्वना देते थे। अब कंस आठवें बच्चे की प्रतीक्षा में था, क्योंकि कंस जानता था कि वह ही उसे मारेगा। कंस ने जब देवकी के चेहरे पर देवी जैसी आभा देखी, तब उसने मन में सोचा, "तो मेरे जीवन का अंत करने वाला देवकी के गर्भ में आ चुका है, अब मैं क्या करना चाहिए? मैं अपनी बहन को तो नहीं मार सकता।" उसने भगवान के प्रति बहुत क्रोध का अनुभव किया। देवकी और वासुदेव पर वह अपनी की नजर रखने लगा। उसने रक्षकों को आदेश दिया कि जैसे हीं बच्चे का जन्म हो, उसे तुरंत सूचना दे।



कृष्ण जन्म

जब देवकी ने अपने आठवें पुत्र को जन्म दिया, तो वासुदेव ने इस देव शिशु को सबसे पहले देखा। उसके दैवीय रूप को देखते ही वासुदेव और देवकी ने उससे कहा, “हमें बहुत ज्यादा डर है कि कंस या कोई अन्य व्यक्ति तुम्हारे इस दैवीय रूप को देख न ले। कृपया करके अपना यह रूप छुपा लो।”

भगवान ने अपनी माया शक्तियों से एक सुंदर शिशु का रूप धारण कर लिया और वासुदेव से कहा, “अगर तुम कंस से डरते हो, तो इसी समय मुझे गोकुल ले जाओ और सो रही यशोदा के बाजू में लिटाकर वहां से एक शिशु कन्या योगमाया जिसे यशोदा ने जन्म दिया है उसे ले आओ।” जैसे ही वासुदेव ने बच्चे को गोद में लिया, वैसे ही उनके शरीर से सारी जंजीरें टूट गयीं। कारागार के सारे बंद दरवाजे खुल गये और सिपाही माया के प्रभाव से सो गये। कारागार का अंधेरा रास्ता रोशन हो गया। उस रात हल्की बारिश हो रही थी। वासुदेव ने बच्चे को टोकरी में रख लिया और यमुना को पार करने लगे। शेषनाग ने शिशु को बारिश से बचाने के लिए अपने फन से शिशु को ढक दिया। गहरी यमुना, जिसमें बा थी, उसने वासुदेव के लिए रास्ता बना दिया।



वासुदेव ने यमुना को पार किया और गोकुल पहुंच गये। वे यह देखकर आश्वर्य चकित थे कि सभी लोग सो रहे थे।

वासुदेव ने बालक शिशु को यशोदा के बाजू में रखा और वहां सो रही शिशु कन्या को उठाकर अपने कारागार में वापिस आ गये। वापिस आकर उन्होंने कन्या को देवकी के पास लिटा दिया और अपने पैरों में पहले की तरह जंजीरें पहन लीं। कारागार के दरवाजे अपने आप बंद हो गये।

सुबह होते ही और रक्षक भी बच्चे के रोने की आवाज सुन कर जाग गये। वे दौ कर गये और उन्होंने कंस को बच्चे के जन्म के बारे में बताया।



बच्चे के जन्म की सूचना पाते ही कंस कारागार की तरफ दौ कर आया, जहां पर देवकी कैद थी। मजबूर देवकी ने कंस से विनती की, “भैया! कृपया करो, इस बच्चे को नहीं मारो। तुम पहले ही मेरे सारे पुत्रों को मार चुके हो। कृपया दया करो।”

कंस ने उसकी एक नहीं सुनी और शिशु कन्या को हाथों से उछाल कर पथर पर फेंक दिया। वह शिशु कन्या साधारण कर्या नहीं थी, वह तो देवी थी। इसलिए वह कंस के हाथों से फिसल गई और देखते ही देखते वह देव रूप में आसमान में प्रकट हो गयी। उसके आठ हाथों में विभिन्न शस्त्र जैसे धनुष, तीर, ढाल, तलवार, शंख, और गदा थे।

उसने कहा, “ओ मूर्ख कंस! तू मुझे क्या मारेगा? बल्कि तुझे मारने वाला तेरा शत्रु कहीं और जन्म ले चुका है। तुमने जिन नवजात शिशुओं को बिना कारण मार दिया है, उसका दंड तुम्हें जरूर मिलेगा।” यह कहते ही वह आसमान से गायब हो गई।

यह सुनते ही कंस आश्वर्यचाकित रह गया। उसने देवकी और वासुदेव के बंधनों को खोल दिया और बहुत पश्चाताप के साथ कहा, “प्रिय बहन देवकी और वासुदेव! मैं बहुत बापापी हूं। मैंने आपके सारे बच्चों को मार दिया। मैं बहुत ही बुरा आदमी हूं, इसलिए मेरे शुभचिन्तकों ने भी मुझे छो दिया है। मैं नहीं जानता कि मेरी मृत्यु के बाद भी मेरे भाग्य में क्या लिखा है।” यह कहकर पछतावे के साथ उसने रोना शुरू कर दिया।

श्रीकृष्ण और पूतना राक्षसी

गोकुल में यशोदा को विश्वास हो गया था कि उसने एक ल के को जन्म दिया है ल की को नहीं, क्यूंकि जन्म के समय वह बेहोश थी। जैसे ही सबको पता चला कि राजा नंद के यहां पुत्र ने जन्म लिया है, वहां खुशी की लहर दौ गई। उस बालक को देखने के लिए अनगिनत गोपियां गोकुल पहुंच गयीं। जब उन्होंने कमल जैसी आंखों और लाल रंग के होठों वाले उस सुंदर बालक को देखा, तो सारी गोपियां उसे अपनी गोद में लेने के लिए आतुर हो उठीं। प्रसन्न नंद ने ब्राह्मणों को दान दिया। ब्रज के लोगों ने अपने घरों और गायों को सजाया।

उधर देवी माया की आकाशवाणी से घबराए कंस ने अपने सलाहकारों को बुलाया और उनको देवी माया की भविष्यवाणी के बारे में बताया। उन्होंने कहा, “ महाराज आप चिन्ता नहीं करें, हम उन सारे नवजात बालकों को मार देंगे, जिन्होंने आज के दिन मथुरा में जन्म लिया है।” कंस ने अपने राक्षसों को नवजात शिशुओं को मारने का आदेश दिया।



कंस के आदेश से भयानक राक्षसी पूतना कामधेनु गायों और चारागाहों की धरती गोकुल की ओर नवजात बालकों को मारने चल दी।

उस दुष्ट राक्षसी पूतना का काम था ही बच्चों को मारना। लोगों ने उसके डर से अपने बच्चों को अपने घरों में छुपा लिया। उसके पास उ ने की शक्ति तो थी ही, साथ ही वह अपनी इच्छा से कोई भी रूप धारण कर सकती थी।

उसी दिन वह उ ते हुए गोकुल जा पहुंची और एक सुंदर गोपी का रूप रख कर नंद बाबा के घर पहुंच गई। वहाँ उसने देखा कि शिशु कृष्ण पालने में सो रहा था। पूतना ने श्रीकृष्ण को अपनी गोद में उठा लिया और यशोदा से कहने लगी, " कैसी माँ हो तुम? तुम्हें दिखाई नहीं देता तुम्हारे बच्चे को भूख लगी है, चलो इसे मैं अपना दूध पिला देती हूँ।" पूतना बहुत सुंदर रूप में थी, इसलिए यशोदा ने सोचा, " मैं किस्मत वाली हूँ जो मेरा पुत्र इतनी सुंदर स्त्री का दूध पियेगा। मैं उसे नहीं रोकूँगी ।" यशोदा नहीं जानती थीं कि पूतना की छाती में बहुत खतरनाक जहर है जो उसके बच्चे को मार सकता है। लेकिन हुआ कुछ औरपूतना ने जैसे ही बालक श्रीकृष्ण के मुंह में दूध पिलाने के लिए अपना स्तन दिया, वैसे ही उन्होंने अपने दोनों हाथों से उसके स्तनों को पक लिया और एक ही बार में उसके प्राण चूसने लगे ।



दर्द के मारे पूतना जोर-जोर से चिल्लाने लगी, “मुझे छो दो, जाने दो, अब और नहीं सहा जाता।” उसकी आंखे फैलकर बाहर की ओर आने लगीं और उसे बहुत ज्यादा पसीना आना शुरू हो गया। वह जमीन पर पैर पटक पटक कर जोर-जोर से

छटपटाने लगी। उसकी छाती में बहुत ज्यादा दर्द होने लगा और इससे वह अपने असली राक्षसी रूप में वापिस आ गई। छटपटाते हुए आखिर में वह एक बै पहा की तरह घाम से गिर पी, जिससे उसका विकराल शरीर जहां गिरा उसके पास के बहुत सारे पे टूट गये। रोहिणी और यशोदा के साथ गोपियां दौ कर वहां आईं और शिशु कृष्ण को उठा लिया, जो बिना डर के पूतना के निर्जीव शरीर पर खेल रहा था। पूतना अपने पापों से उसी समय मुक्त हो गई थी, जिस समय उसने श्रीकृष्ण को दूध पिलाया था। अंतिम क्रिया के समय उसे जलाने पर उसके शरीर से चंदन की तरह सुगंध आई, क्योंकि श्रीकृष्ण के छुने मात्र से शत्रु की आत्मा तक पवित्रा हो जाती है। मरने के बाद श्रीकृष्ण को मारने वाली पूतना ईश्वर की लालन-पालन करने वाली मां बन गई थी।



त्रिनवरता की मृत्यु

एक दिन यशोदा कृष्ण को अपनी गोद में दुलार रही थीं, तभी अचानक श्रीकृष्ण पहा की तरह भारी हो गये। वे जब शिशु कृष्ण का भार नहीं उठा पाई, तो उन्होंने उसे जमीन पर बैठा दिया। थो ऐ देर बाद यशोदा घर के किसी काम में लग गई और शिशु कृष्ण अकेले हो गए।

कंस का एक अनुचर त्रिनवरता नाम का राक्षस था। कंस के आदेश पर वह गोकुल में भीषण आंधी के रूप में आया, और उसने बच्चों को अपने प्रकोप से डराकर जमीन पर बैठा दिया। कुछ समय के लिए सारा गोकुल अंधेरे और धूल से ढक गया। कुछ पलों के लिए कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। यशोदा उस आंधी में अपने पुत्र को व्याकुलता से ढूँढ रहीं थीं, पर वह उन्हें नहीं मिला। श्रीकृष्ण के न मिलने पर वे दुःख और डर से अचेत होकर जमीन पर गिर गईं। जब आंधी का असर कुछ कम हुआ, तो गोपियां यशोदा का रोना सुनकर दौ कर उनके पास आईं।





उधर वह राक्षस शिशु कृष्ण को अपने साथ उ । ले गया था, पर श्रीकृष्ण के वजन में भारी होने के कारण वह उन्हें तेजी से उ । नहीं पा रहा था। इसलिए वह उनको लेकर धीरे-धीरे धरती की ओर आने लगा । लेकिन शिशु कृष्ण ने उसकी गर्दन इतनी जोर से दबा दी थी कि राक्षस का गला ही घुट गया। प्राणहीन होकर वह जमीन पर गिर गया। गोकुल के निवासी उस राक्षस को श्रीकृष्ण के साथ आसमान से धरती पर गिरते देख रहे थे। श्रीकृष्ण उस मरे हुए राक्षस की छाती पर बैठकर बहुत खुश हो रहे थे। सभी यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित थे। यशोदा ने दौ कर श्रीकृष्ण को उठाया और अपनी छाती से लगा लिया। यशोदा और नंद बाबा सोच रहे थे कि यह उनके अच्छे कर्मों का फल था, जिससे उनका पुत्र उस भयानक घटना में बाल-बाल बच गया।



शरारती बालक श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण बहुत शरारती थे। वे दूसरे ग्वालों के साथ मिलकर मथुरा की ओर जाने वाली गोपियों के दूध, मक्खन और दही चुरा लेते थे। खुद खाने के बाद बचा हुआ अपने मित्रों में बांट देते थे। उनसे बचाने के लिए गोपियां मक्खन को ऊंचे स्थानों पर छुपाने लगीं। इसलिए अक्सर मक्खन को हंप करने के लिए वे तिपाईं पर लटक रहे बर्तनों में छेद कर देते थे। अगर बर्तन उनकी पहुंच से दूर होता वे नीचे ओखली रखकर उस तक पहुंचने के लिए उस पर चढ़ जाते।

एक बार एक गोपी ने श्रीकृष्ण को मक्खन चुराते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया और उसकी चोरी की शिकायत करने के लिए उसे यशोदा माँ के पास ले गई। श्रीकृष्ण ने बैचमत्कारी तरीके से अपना हाथ छुला लिया। जब वह गोपी यशोदा माँ के पास पहुंची तो उसने श्रीकृष्ण को अपने पास नहीं पाया। इससे वह लज्जित होकर अपने घर वापिस चली गई।

एक दिन बलराम और दूसरे लकों ने यशोदा से शिकायत की कि कृष्ण मिट्टी खा रहा है।



यशोदा ने श्रीकृष्ण को डांटकर कहा, “क्यों रे कृष्ण भला इतना रस लेकर तुम यह मिट्टी क्यों खा रहे हो?” श्रीकृष्ण ने कहा, “ओ माँ! मैं मिट्टी नहीं खा रहा था। यह ल लें झूठ बोल रहे हैं। आप मेरा मुंह खुद देख लीजिये।” यशोदा ने कहा, “अपना मुंह खोलो, मेरे बच्चे।” जब श्रीकृष्ण ने अपना मुंह खोला, तो यशोदा उसमें सारे संसार की सजीव और निर्जीव चीजें, आसमान, पहा , समुद्र, सारी धरती, हवा, आग, सूरज, चांद और तारे, सात द्वीप, ग्रह, मन, ज्ञान, वृदावन और यहां तक कि खुद को भी उसके मुंह में देखकर घबरा गई। वे यह सब देख कर अचाम्भित थीं और उन्हें लगा कि यह एक सपना है, या मेरे बच्चे ने किसी यौगिक शक्तियों के साथ जन्म लिया है?“ पर बाद में वे श्रीकृष्ण की माया से उस दृश्य को भूल गईं। उन्हें बस यही याद रहा कि श्रीकृष्ण उनका अपना पुत्र है और उन्होंने उसे गोद में ले लिया।



दामोदरः कृष्ण को बांधना

एक दिन यशोदा अपने पुत्र के लिए मक्खन मथ रही थी। वे इस काम को बहुत खुश होकर कर रही थी, इसलिए उन्हें पता ही नहीं चला कि कब उनका पुत्र कृष्ण नींद से जाग गया। नींद से जागकर श्रीकृष्ण अपनी माँ के पास आये। वे भूखे थे और चाहते थे कि माँ उन्हें खाने के लिए कुछ दे। उन्होंने मथनी की छ ली और मथनी को चलाने से रोक दिया। फिर वे माँ की गोद में बैठ गये और दूध पीने लगे। अचानक यशोदा माँ ने देखा कि आग पर दूध उबल रहा था और नीचे गिर रहा था। कृष्ण को छो कर यशोदा जल्दी से आग पर से बर्तन हटाने चली गई। इस बात पर श्रीकृष्ण को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने अपने होंठ भींचकर दूध के बर्तन को एक पत्थर से तो दिया। फिर वे दूसरे कमरे में गये और उन्होंने आँखों में झूठ-मूठ के आंसू भरकर मक्खन खाना शुरू कर दिया।



यशोदा कुछ समय बाद वापिस आई तो उन्हें टूटा हुआ दूध का बर्तन और टुकँ में टूटी छँ दिखाई दी। वहां चारों ओर दूध बिखरा हुआ था। यशोदा ने एक बार में ही अंदाजा लगा लिया कि यह उनके पुत्र का काम है। श्रीकृष्ण वहां से पहले ही जा चुके

थे। उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण उलटी हुए ओखली पर खे होकर मजे से वहां लटके हुए बर्तन की चीजें मित्रों में बांट रहे थे।

यशोदा चुपचाप एक छोटी हाथ में पकड़े उनके पास जा पहुंची। उन्हें देखकर श्रीकृष्ण जल्दी से ओखली से नीचे उतरे और ऐसे भागे जैसे डर गए हों। यशोदा उनके पीछे भागी और आखिर में उन्होंने उनको पकड़ लिया। यशोदा ने छोटी फेंक दी और श्रीकृष्ण को ओखली के साथ रस्सी से बांधने की कोशिश करने लगी; पर जब उन्होंने श्रीकृष्ण को रस्सी से बांधना शुरू किया तो उन्होंने देखा कि रस्सी कुछ छोटी परही है।



वे रस्सी का एक और टुक । लेकर आई और उसे उस रस्सी से जो दिया। उन्होंने फिर देखा कि रस्सी अब भी छोटी थी। उन्होंने फिर से एक और टुक । जो दिया। दूसरा टुक । जो ने पर भी रस्सी कुछ छोटी ही थी। वह आशर्चय में थीं। जब श्रीकृष्ण ने देखा कि उनकी मां बहुत ज्यादा थक गई और उनका शरीर पसीने हो गया, तो उन्हें मां पर दया आ गई। तब उन्होंने ओखली से खुद को बांधने की आज्ञा दी। उनका पेट रस्सी से बंध गया। इस घटना के बाद सब उनको दमोदर कहने लगे।



यमला अर्जुन का पे

जब श्रीकृष्ण ओखली से बंधे हुये थे, तो उन्होंने इधर-उधर देखना शुरू किया। तभी उनकी नजर अर्जुन के दो पे पर पी। यशोदा अपने घर के कामों में लगी हुई थीं। अपनी पिछली जिन्दगी में वह अर्जुन के दोनों पे धन के देवता कुबेर के पुत्र थे। जिसे सब नल कुबेर या मणिग्रीवा के नाम से पुकारते थे। वह दोनों भगवान शिव के भक्त थे।

वे बहुत घमं थे, क्योंकि उनके पास धन था। एक दिन वे मदिरा पी रहे थे और गंधर्व कन्याओं के साथ नदी में खेल रहे थे, जो नग्न अवस्था में थीं। नारद मुनि उसी रास्ते से गुजर रहे थे। उनको इस अवस्था में देखकर नारद मुनि उन्हें श्राप न दे दें, इस भय से और अपनी नग्न अवस्था पर लज्जा का अनुभव करके उन गंधर्व कन्याओं ने उसी पल अपने कप पहन लिये। पर उन दोनों भाईयों ने मदिरा के प्रभाव के कारण नारद मुनि की कोई परवाह नहीं की।



यह देखकर नारद मुनि ने उनको श्राप दे दिया कि, “यह दोनों कुबेर के पुत्र अच्छे परिवार से हैं, पर यह गलत चीजों के कारण बहुत ज्यादा ढीठ हैं। मेरा श्राप है कि ये दोनों पे बन जाएं।” इस तरह से वे कुबेर पुत्र वृदावन में अर्जुन के पे का जो बन गये। वे यमला अर्जुन के पे के नाम से जाने जाते थे।

श्रीकृष्ण पे के पास जा पहुंचे। ओखली भी उनके पीछे खिंची जा रहा थी और वे दोनों पे के बीच में फस गयी। फिर श्रीकृष्ण तो पे ैं के जो ैं को लांघकर दूसरी ओर चले गये, पर ओखली पे ैं के बीच अटक गयी। जब उन्होंने ओखली को जोर से खींचा, तो दोनों पे उख कर भयानक आवाज के साथ नीचे जमीन पर गिर गये। उस भयानक आवाज को सुनकर गोपियां और ग्वाले दौ कर वहां आए। उन्होंने देखा कि अर्जुन के पे जमीन पर गिर गए थे। थो १ देर बाद जब नंद बाबा वहां आये, तो लोगों ने उन्हे बताया, "यह सब श्रीकृष्ण ने किया है। श्रीकृष्ण ने ओखली को खींचा, जिससे टकराकर दोनों पे नीचे गिर गये, और इन पे ैं मे से दो आदमी बाहर आये।"



पर किसी ने भी विश्वास नहीं किया कि इतना छोटा बच्चा दो बै पे को ज से उखा सकता है। उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण अभी भी ओखली से बंधे हुए थे। नंद बाबा ने वह रस्सी खोल दी, जिससे श्रीकृष्ण बंधे हुए थे। उन्हांने बच्चों की बातों की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।



वृंदावन में श्रीकृष्ण

एक दिन श्रीकृष्ण और बलराम अपनी उम्र के ल कों के साथ खेल रहे थे, तभी एक बूँ औरत फल बेचने वहां आई। वह लोगों को फल खरीदने के लिए बुला रही थी, पर कोई भी उसके फल खरीदने नहीं आया। जब श्रीकृष्ण ने देखा कि वह बहुत ज्यादा थक गई है, तो उन्होंने बूँ औरत से कहा, "मां! मुझे कुछ फल दे दो।" बूँ औरत ने उसी समय टोकरी नीचे जमीन पर रख दी और बालक श्रीकृष्ण की हथेली फलों से भर दी। बदले में बूँ औरत ने उनसे कुछ अनाज देने के लिए कहा। श्रीकृष्ण ने उसे इतंजार करने के लिए कहा। थोँ देर में श्रीकृष्ण वापिस आए, तो उनकी मुट्ठी में अनाज के दाने भरे हुए थे। पर दाने उनके हाथों से फिसल गये और हथेली में सिफ कुछ ही दाने बचे थे। श्रीकृष्ण ने बचे हुए दाने उसकी टोकरी में रख दिये। बूँ औरत उनके भोलेपन पर मुस्कुराई और उसने फिर से उनकी हथेली उनके मनपसदं फलों से भर दी। जब बूँ औरत ने अपनी झोप नी में वापिस आकर टोकरी खोली, तो वह टोकरी को देखकर हैरान हो गई, क्योंकि उसमे हीरे और मोती भरे हुए थे।



इन कीमती चीजों को देखकर गोकुल के बै - बूँ डर गये। उन्होंने सोचा कि उनके गांव मे बुरी आत्माएं आ गई हैं। पहले पूतना आई, फिर आंधी - तूफान और फिर पैरों का जल से उखना ना, यह सब घटनाएं किया बुरी आत्मा का काम है। उन्होंने किसी सुरक्षित जगह पर जाने का फैसला किया। ऐसा सोच कर उन्होंने वृदावन नामक सुरक्षित और सुंदर जगह की ओर जाने का निर्णय किया।



यमुना नदी उस जगह के पास से गुजरती थी । वहां पर हरी - भरी चारागाह भी थी, जहां उनके मवेशी भी धास चर सकते थे । शीघ्र ही युवा और बलवान् शरीर वाले गोप उस ओर कूच करने लगे । बु' और औरतें उनके पीछे रथ में थे । एक खुली जगह पर पहुंच कर उन्होंने अपने तंबू लगा लिये । उन्होंने उस जगह को अपना घर बनाने का फैसला किया । मवेशियों के लिए हरी धास चरने के लिए वहां थी । गाय चराने वाले अपनी दुध देने वाली गायों के साथ बहुत खुश थे । श्रीकृष्ण और बलराम बहुत तेजी से ब' हो रहे थे और दिनों - दिन ताकतवर हो रहे थे ।



बकासुर राक्षस

एक दिन श्रीकृष्ण, बलराम और उनके मित्र अपने मवेशियों के लिए चारा लाने गये थे। वे गाय चराने वाले अन्य लोगों के साथ खेल रहे थे और यमुना के किनारे बछड़ों की देखभाल भी कर रहे थे। वे बांसुरी बजाते हुए अपने पैरों में घुंघरू बांधकर नाच रहे थे। बीच-बीच में कभी वे दो बैलों की तरह आपस में लड़ने का खेल भी खेलते थे। इसी आनंद में वे कभी मोर, कोयल और बंदरों की आवाजें निकाल कर मजा ले रहे थे। अचानक देनकासुर नाम के एक राक्षस ने चुपके से एक बछड़ों को उठा लिया और श्रीकृष्ण और बलराम को मारने के इरादे से चारागाह में दाखिल हो गया। श्रीकृष्ण यह सब जानते थे इसलिए उन्होंने बलराम को इशारा किया। फिर उस राक्षस पर मन ही मन हंसते हुए वे चुपचाप राक्षस के पास पहुंचे। उन्होंने उसे उसके पीछे से टांगों और पूँछ से पकड़ लिया और आसमान में गोल-गोल धुमाकर एक पेंडी की तरफ फेंक दिया। पेंडी पर गिरते ही राक्षस मर गया। गाय चराने वाले लड़के विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि छोटा श्रीकृष्ण यह कर सकता है। उन्होंने श्रीकृष्ण की प्रशंसा की और चिल्लाने लगे, "कोई भी हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकता, जब तक श्रीकृष्ण हमारे साथ है।"



एक दिन गाय चराने वाले ल के अपने बछड़ों को पानी पिलाने के लिए नदी के किनारे ले गये। उन्हे वहां पर एक बहुत ब । पहा की तरह दिखने वाला राक्षस दिखाई दिया। वह बकासुर नाम का राक्षस था, जो कि सारस पक्षी के



रूप में था। उसकी चोंच बहुत सख्त और तेज थी। बकासुर राक्षस अचानक श्रीकृष्ण पर झपटा और उन्हें अपनी चोंच से पक कर अपने मुँह में डाल लिया। यह दृश्य देखकर गोपियां इतना ज्यादा डर गयीं कि वे अचेत हो गयीं। लेकिन बकासुर के मुँह के अंदर श्रीकृष्ण का शरीर बहुत ज्यादा गर्म हो गया इसलिए सारस उनको अपने मुँह में नहीं रख सका। उसका मुँह जलने लगा और उसने श्रीकृष्ण को बाहर थूक दिया। वह उनका एक छोटा ग्रास भी नहीं ले सका। जब बकासुर ने अपनी सख्त चोंच से उन्हें फिर से पक ने की कोशिश की, तो श्रीकृष्ण ने उसकी चोंच के दोनो हिस्सों को पक लिया और उसे गन्ने की तरह चीर दिया। बकासुर राक्षस मर गया। सारे लोग बहुत खुश हो गए और उन्होंने राहत की सांस ली। ईश्वर ने श्रीकृष्ण पर फूलों की बारिश की। श्रीकृष्ण सारे ग्वाल-बालों और चारवाहों के साथ अपने गांव वापिस आ गये।



जहरीला सांप अगासुर

एक दिन जब श्रीकृष्ण जंगल में अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे, उसी समय अगासुर नाम का एक ताकतवर राक्षस वहां आ पहुंचा। उसे श्रीकृष्ण को मारने के लिए कंस ने भेजा था। जब उसने देखा कि श्रीकृष्ण अपने मित्रों के साथ मजे से खेल रहे हैं, तो उसे बहुत गुस्सा आया, क्योंकि वह पूतना और बकासुर का भाई था। उसने सोचा, "इसने मेरे भाई और बहन को मार दिया और देखो अब कितने मजे से खेल रहा है। मैं इससे बदला लूंगा। मैं श्रीकृष्ण को बलराम और उसके मित्रों के साथ खत्म कर दूंगा।" दुष्ट अगासुर ने एक बहुत बड़े अजगर का रूप धारण कर लिया। उसका शरीर इतना बड़ा हो गया कि वह एक बहुत बड़े पहाड़ की तरह दिखने लगा था। उसने अपना बड़ा मुँह खोला ताकि वह सारे बच्चों को निगल ले। उसका मुँह इतना बड़ा था कि उसका नीचे वाला होठ जमीन को छू रहा था और लग रहा था कि उसका ऊपर वाला होठ आसमान को छू रहा हो। उसके जब छोटी गुफाओं की तरह और उसके बड़े नुकीले दांत चट्टानों की तरह लग रहे थे। उसके मुँह के अन्दर अंधेरा था। उसकी जौम एक चौड़ी लाल संक की तरह दिख रही थी और उसकी सांस आंधी की तरह चल रही थी। उसकी आंखें आग की तरह चमक रही थीं।



जब ल कों ने उसे देखा तो उन्होंने सोचा कि यह वृद्धावन का बहुत ही आकर्षक स्थान है। वे सारे ल के, जिन्होंने अपने हाथों से अपने बछे पक हुए थे, वे उनको छो कर खुशी में तालियां बजाने लगे और मुसकुराते हुए अगासुर के मुंह के अंदर प्रवेश करने लगे। वे सभी तरह-तरह की बातें करते हुए अगासुर के मुंह में अंदर चले जा रहे थे। उनको उस अनजानी गुफा में जाते हुए डर भी नहीं लगा, क्योंकि सबको पता था कि श्रीकृष्ण उनके साथ है और यदि उनको कुछ होगा भी, तो श्रीकृष्ण उनको बचा लेंगे।



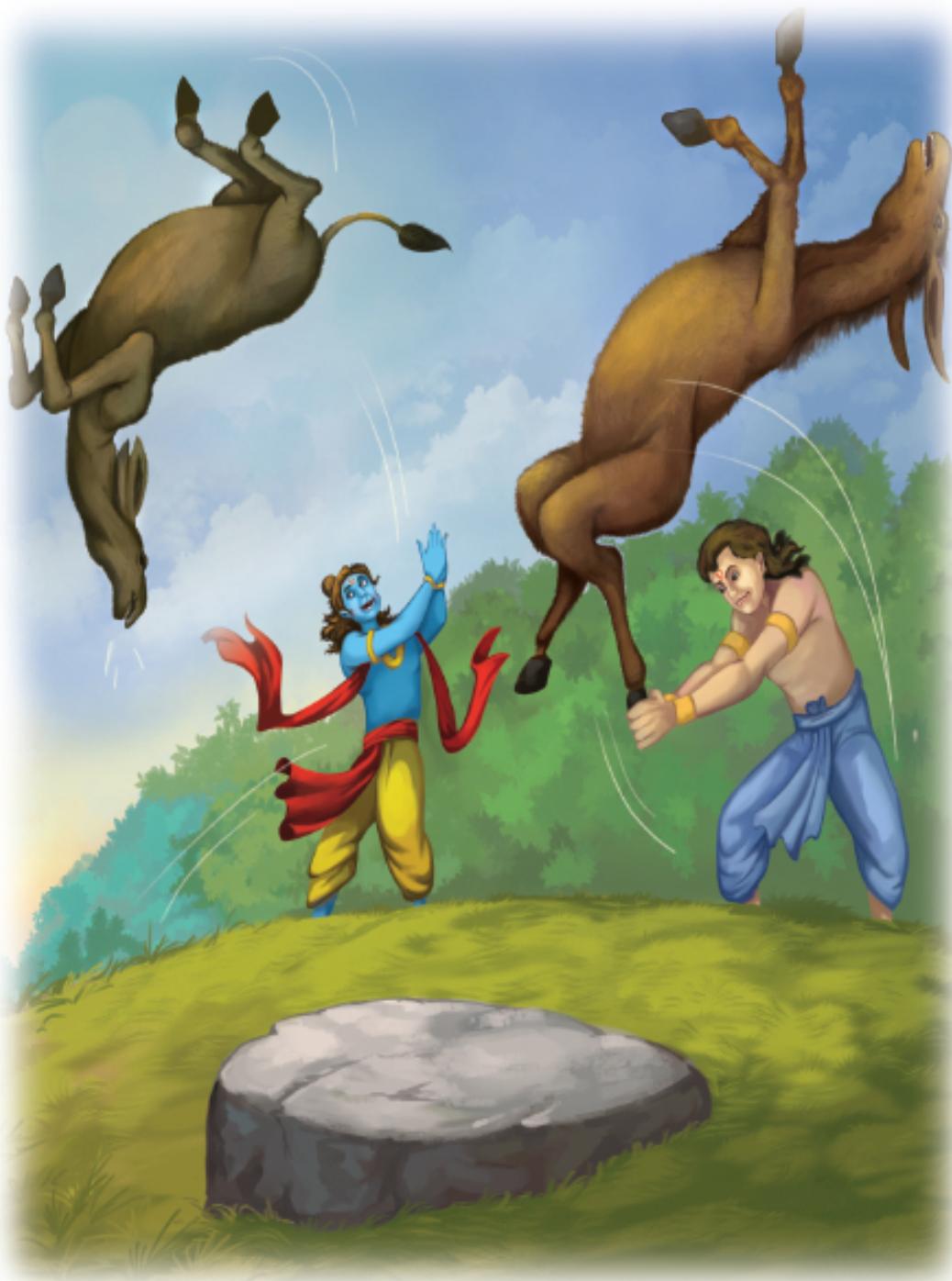
अगासुर ने अपना मुंह बंद नहीं किया, क्योंकि वह तो श्रीकृष्ण के प्रवेश करने का इंतजार कर रहा था। श्रीकृष्ण अच्छी तरह से जानते थे कि उनके मित्र उस दुष्ट अगासुर के मुंह में प्रवेश कर चुके हैं। उनके मित्र उनके आगे थे, इसलिए वे भी अगासुर के मुंह में प्रवेश कर गये। अगासुर ने उसी समय अपना मुंह बंद कर लिया।

लेकिन तभी श्रीकृष्ण ने अपना शरीर बहुत बाँकर लिया जिससे अगासुर का गला घुट गया, उसकी आंखे बाहर आ गयीं और सांसें रुक गयीं। अगासुर मर गया। कृष्ण ने ग्वालों और बछड़ों को नयी जिन्दगी दी और उनको अगासुर के मुंह से बाहर निकाला।

धेनूकासुर राक्षस

एक दिन श्रीकृष्ण और बलराम के परम मित्र श्रीदमन, सूबाला, सटोका और दूसरे साथी श्रीकृष्ण और बलराम के पास पहुंचे और कहा, “यहाँ से कुछ ही दूरी पर ता के पे ऊँ का बहुत सुंदर झुरमुट है। वहाँ पके हुए ता के फलों के पे ऊँ की कतारें हैं। पर वहाँ कोई भी नहीं जा सकता, क्योंकि वहाँ धेनूकासुर नाम का एक राक्षस अपने परिवार के साथ रहता है और उसने लोगों को वहाँ पर आने से मना किया है। वह एक गधे के रूप में वहाँ रहता है। वह इतना ज्यादा शक्तिशाली है कि जो भी उस बगीचे में जाता है, वह उसे मार देता है। वह पहले ही बहुत सारे आदमियों को मार चुका है। इसलिए लोग डर के मारे उस जगह पर नहीं जाते हैं। हम उन फलों की सुगंध सूंघ चुके हैं जिसने हमें बहुत ज्यादा आकर्षित किया है। हम उन्हें खाना चाहते हैं।”





अपने मित्रों को फल खिलाने कि इच्छा से बलराम साहसपूर्वक जंगल में दाखिल हुए। और जोर-जोर से पे को हिलाने लगे। जिससे बहुत सारे फल पे से नीचे गिर गए। जब धेनूकासुर ने फलों के गिरने की आवाज सुनी, तो वह दौ कर आया और उसने अपने पिछले पैरों से बलराम की छाती में जोर से वार किया। बलराम ने धेनूकासुर के दोनों पिछले पैरों को पक लिया और अपने सिर के चारों ओर जोर से घुमाकर ब

ता के पे की तरफ फेंक दिया। जिससे धेनूकासुर मर गया। फिर धेनूकासुर के सभी संबंधियों और रिश्तेदारों ने बलराम और श्रीकृष्ण दोनों पर हमला कर दिया। वे सब भी बलराम और श्रीकृष्ण द्वारा मारे गये। फिर श्रीकृष्ण और बलराम के साथियों ने मन भरकर फल खाये। धेनूकासुर और उसके परिवार के खत्म होने के बाद, लोग बिना डरे झुरमुट में दाखिल होने लगे और गायें भी आजादी से उस झुरमुट के चारागाह में चारा खाने जाने लगीं।



ब्रह्मदेव की शरारत

श्रीकृष्ण ने अगस्तु से सारे ग्वालों को बचा लिया था। फिर यमुना नदी के रेतीले किनारे की ओर लै जाकर उनसे कहा, “यहां की रेत बहुत साफ और मुलायम है, चलो हम यहां खेलते हैं। पर हमें पहले कुछ खा लेना चाहिए।” उन्होंने अपने बछों को घास चरने के लिए वहां छो दिया और सभी भोजन करने के लिए बैठ गये। जब वे मजे से खा और खेल रहे थे, तब उनके बछों घास की खोज में घने जंगल में भटक गये। जब ग्वालों ने अपने बछों को वहां नहीं पाया, तो वे उन्हें ढूँढ़ने लगे। ग्वाले उनके नहीं मिलने से बहुत ज्यादा डर गये थे। जब वे उनकी खोज के लिए दूसरी ओर जाने लगे, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें रोक लिया और कहा, “चिन्ता मत करो, मैं बछों को वापिस लेकर आऊंगा।” उन्होंने अपने हाथ में भोजन लिया और बछों की खोज में चले गए। दरअसल ब्रह्मदेव श्रीकृष्ण के साथ शरारत करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने बछों को एक सुरक्षित स्थान पर छुपा दिया था। श्रीकृष्ण बछों को नहीं खोज सके और जब वे यमुना के रेतीले किनारे पर वापिस आये, तो उन्होंने देखा कि ग्वाले भी गायब थे। वे उसी समय समझ गये कि ब्रह्मदेव उनके साथ शरारत कर रहे हैं। तब श्रीकृष्ण ने बछों और ग्वालों का रूप धारण कर लिया।

उनका यह रूप उन सारे बछों और ग्वालों के समान था, जो खो गए थे। ग्वालों की माताएं अपने बच्चों के साथ ज्यादा जु गई थीं, क्योंकि श्रीकृष्ण ने खुद को उनके बच्चों के रूप में बदल लिया था। गायों ने भी अपने बछों को जरूरत से ज्यादा प्यार दिखाना शुरू कर दिया था।



श्रीकृष्ण ने यह खेल एक साल तक खेला। जब एक साल पूरा होने में पांच या छः दिन बाकी थे, तब एक दिन बलराम सोचने लगे कि, “मैंने इससे पहले गायों और बछों के बीच इतना प्यार नहीं देखा कि बछों इतने लंबे समय तक उनका दूध पीना नहीं

छो ते। ब्रज के लोग भी श्रीकृष्ण से ज्यादा अपने पुत्रों को प्यार दिखा रहे हैं। यकीनन ही श्रीकृष्ण ने अपनी कोई शक्ति दिखाई है।"

बलराम ने अपनी आंखें खोली और श्रीकृष्ण को सारे बछों, ग्वालों, बांसुरियों, छोंयों और गहने आदि में पाया। उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा, "ओ कृष्ण! यह बछों और गाय चराने वाले लके न तो देव और न ही ऋषि हैं। यह सब आपकी तरह दिख रहे हैं। यह कौन सा ब्रह्मस्य है?" तब श्रीकृष्ण ने बलराम को ब्रह्मदेव के खेल के बारे में बताया।

ब्रह्मदेव ब्रज वापिस आये, तो उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण ग्वालों और बछों के साथ वैसे ही खेल रहे थे जैसे एक साल पहले खेलते थे। उन्होंने सोचा, "यह कैसे हो सकता है? मैंने तो सारे ग्वालों और बछों को मंत्रमुग्ध करके छुपा दिया है। दूसरी तरफ उन्होंने देखा कि ग्वाले और बछों अभी भी वहाँ छुपे हुए हैं जहाँ वे उनको छुपाकर गए थे। वे बुरी तरह घबरा गये। वे अपनी माया के अन्दर रखी इन चीजों और वे जो श्रीकृष्ण की माया के द्वारा पैदा हुए थे, उनके बीच अन्तर नहीं कर पाये।

ब्रह्मदेव श्रीकृष्ण को धोखा देना चाहते थे, पर श्रीकृष्ण ने उन्हें ही धोखे में डाल लिया। फिर उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण उन सारे ग्वालों और बछों में दिख रहे हैं। अब वे उन सबको देख सकते थे कि वे सभी नीलवर्ण के पीले रेशमी पोशाक पहने हुए थे। उन सब के चार हाथ थे और उनमें दिव्य अस्त्र-शस्त्र थे। सभी अपने सिरों पर ताज, कानों में कुँडल, चूंयां, पैरों में घुंघरू और अपनी अंगुलियों में चमकती अंगूठियां पहने हुए थे। उन्होंने यह भी देखा कि बहुत सारे ब्राह्मण श्रीकृष्ण की पूजा कर रहे थे। यह सुंदर दृश्य ब्रह्मदेव को आश्वर्यचकित कर रहा था।



श्रीकृष्ण ने अपनी माया का जाल उतार दिया। ब्रह्मदेव फिर से अपने होश में आ गये और बार-बार श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर कर प्रार्थना करने लगे। उनकी आंखों में आंसू थे और वे उनकी प्रशंसा करने लगे। फिर ब्रह्मदेव ने सारे बछ ों और ग्वालों की उनकी असली जगह पहुंचा दिया। श्रीकृष्ण फिर से ग्वालों और उनके बछ ों को साथ

लेकर वहां गये, जहां वे उनको भोजन करता हुआ छो गये थे। हालांकि उस बीच एक साल का समय गुजर चुका था, लेकिन श्रीकृष्ण के मित्र सोच रहे थे कि यह वही पल है जब श्रीकृष्ण उन्हें छो गए थे। श्रीकृष्ण अपने दोस्तों और बछ ों को ब्रज वापिस ले आये।

कालिया नाग

कालिया नाम का एक बहुत बड़ा जहरीला नाग यमुना नदी में नीचे गहरी गुफा में रहता था। उसने पानी को जहरीला कर दिया था और उसकी जहरीली सांसों से नदी के उस स्थान के ऊपर उन्होंने वाले पक्षी भी मर जाते थे। यहाँ तक कि उसके जहरीले असर से नदी के किनारे के कदम्ब के पेड़ भी सूख गये थे। इस जहरीले पानी में एक भी मछली जीवित नहीं बची थी। गलती से अगर गायें पानी पीती, तो वे भी नदी के तट पर मर जाती थीं। श्रीकृष्ण ने जब देखा कि कालिया नाग यमुना के पानी को जहरीला कर रहा है, तो वे पानी को स्वच्छ करने के लिए उसको नदी से बाहर निकालना चाहते थे। एक दिन श्रीकृष्ण ने अपने पैरों को रस्सी से कसकर बांध और, ऊंचे कदम्ब के पेड़ पर चढ़ गए। उन्होंने वहाँ से पानी में छलांग लगा दी। पानी बिखरकर किनारे के छोर से बाहर छलक गया। कालिया नाग ने श्रीकृष्ण पर हमला कर दिया और उन्हें अपनी कुँडली में जकड़ लिया।

गायें और ग्वाले डर गये। तभी नंदबाबा, यशोदा और गोपियां श्रीकृष्ण को ढूँढते हुए वहाँ आये। उन्होंने देखा कि एक भयंकर नाग ने उन्हे जकड़ हुआ है और वह जोर-जोर से सांस भर रहा है। नंदबाबा अपने पुत्र को बचाने के लिए पानी में छलांग लगाना चाहते थे, पर बलराम ने उन्हें ऐसा करने से रोक लिया, क्योंकि वे जानते थे कि श्रीकृष्ण कोई साधारण बालक नहीं है। वे भगवान थे। श्रीकृष्ण ने जब देखा कि नदी के तट पर हर कोई चिंता में था, तो उन्होंने खुद को सिकोड़ लिया और कालिया नाग की पकड़ से बाहर आ गए।



जब कालिया नाग ने श्रीकृष्ण को काटने की कोशिश की, तो उन्होंने अपने पैर उसके फन पर रख दिये, और जब कालिया ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए दूसरा फन उठाया तो वे उसके साथ खेलने लगे। श्रीकृष्ण ने उसके फन ऊपर उठाये और उन पर नाचना शुरू कर दिया। कालिया के एक हजार फन थे, और हरेक फन में लाल रंग

का पथर जु । हुआ था। श्रीकृष्ण ने उसके हर एक फन को अपने पैरों के नीचे कुचल दिया। जब कालिया नाग का शरीर जगह-जगह से कुचला गया, तो वह भगवान् से रक्षा की गुहार लगाने लगा। कालिया नाग की पत्नियां श्रीकृष्ण से प्रार्थना करने लगीं और अपने पति के जीवन के लिए विनती करने लगीं। श्रीकृष्ण ने अपना नृत्य रोक दिया। कालिया नाग धीरे-धीरे होश में आने लगा।



तब श्रीकृष्ण ने उससे कहा, "अरे ओ नाग ! यहां से अपने सारे बच्चों और पत्नियों को लेकर समुद्र में चले जाओ। यमुना के पानी का यहां के लोगों और गायों को लाभ उठाने दो। मैं जानता हूं कि तुमने गरु के डर के कारण रामनाका द्वीप छो । और इस नदी में आकर रहना शुरू कर दिया है। पर अब, क्योंकि तुम्हारे फन पर मेरे पैरों के निशान बने हैं, इसलिए गरु तुम्हें छू भी नहीं सकता। उसके बाद कालिया नाग

अपनी पत्नियों, दोस्तों और बच्चों के साथ रामनाका द्वीप की तरफ चला गया। फिर यमुना का पानी अमृत के समान मीठा हो गया।

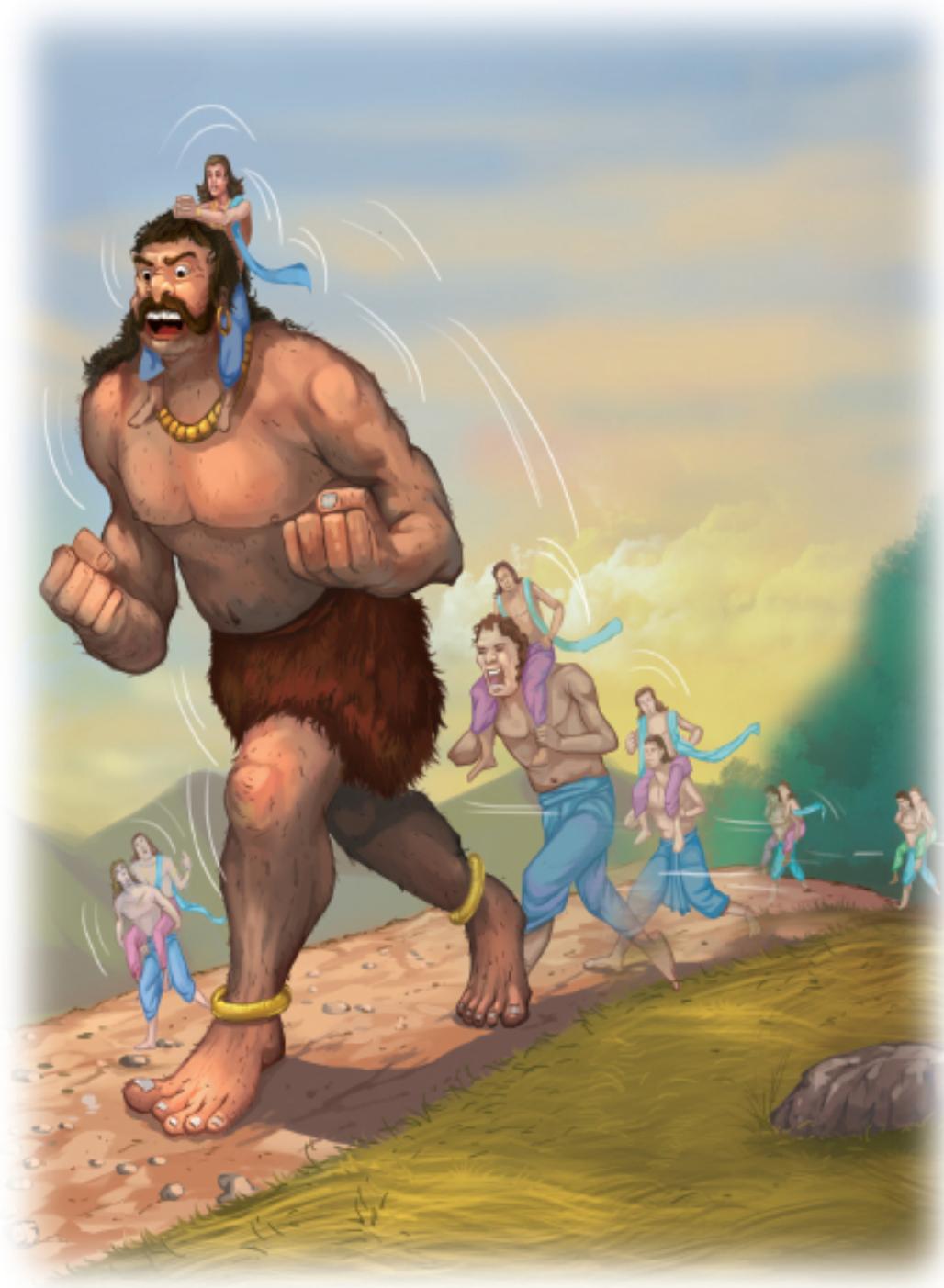


प्रालम्बा राक्षस

एक दिन बलराम, कृष्ण और अन्य गवाले खुद को लाल मूँगा, मोर के पंख की कलागी, फूलों की माला और खूबसूरत जंगली फूलों से सजाकर जंगल में गये। सभी खूब धमाचौक ी के उद्देश्य से वहां गए थे, इसलिए कुछ ने वहां पहुंचते ही नाचना शुरू कर दिया, जबकि दूसरों ने अपनी ऊँची आवाज में गाना शुरू कर दिया। उनके शोर शराबे को सुनकर प्रालम्बा नाम के एक राक्षस ने खुद को गवाले के रूप में बदल लिया और दूसरे ल कों के साथ मिल गया। उसका ध्यान श्रीकृष्ण और बलराम को ले जाने में था। सब जानते थे कि श्रीकृष्ण उसे खोज लेंगे, इसलिए राक्षस को मारने के लिए वे उसके साथ दोस्ती का ढोंग कर रहे थे।

श्रीकृष्ण ने अपने दोस्तों के आगे प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा, “आओ मित्रों! चलो हम सारे ल कों को दो दलों में बांट लेते हैं और खेलते हैं।” इसके बाद उन्होंने खुद को दो दलों में बांट लिया। कुछ ने बलराम के नेतृत्व में खेलना शुरू किया और कुछ ने श्रीकृष्ण के नेतृत्व में। यह तय हुआ था कि हारा हुआ दल जीते हुए दल को अपनी पीठ पर बिठाकर चुने हुए निशान तक लेकर जायेगा।





खेल में, सुदामा, वृशबा और दूसरे ल के बलराम के साथ थे। बलराम का दल जीत गया, इसलिए श्रीकृष्ण ने सुदामा को उठाया, भद्रसेना ने वृशबा को उठाया और प्रालम्बा राक्षस ने बलराम को उठाया। प्रालम्बा राक्षस बलराम के साथ निशान से आगे पहुंच गया। बलराम को उसकी शैतानी पर थोड़ा शक हुआ। तभी प्रालम्बा राक्षस ने अपना बहुत बड़ा रूप धारण कर लिया। बलराम ने अपनी मजबूत मुट्ठी से

प्रालम्बा राक्षस के सिर पर प्रहार किया जिससे उसका सिर चूर-चूर हो गया। प्रालम्बा राक्षस ने खून की उल्टी की और गिरकर मर गया। सभी ग्वाले जो मदद के लिए आये थे, उन्होंने बलराम को अपने कंधें पर उठा लिया और उसकी प्रशंसा में गाते हुए वापिस चले गये।



गोवर्धन पर्वत और भगवान इंद्र

एक दिन जब श्रीकृष्ण ने देखा कि ब्रज के लोग इंद्रदेव की पूजा की तैयारी कर रहे हैं, तो उन्होंने अपने पिता नंद से पूछा, "मझे बताइए, पिताजी! इस त्यौहार के लिए लोग इतने उत्साहित क्यों हैं? इसे करने के लिए आप क्यों और कैसा बलिदान देते हैं?"

नंद ने उत्तर दिया, "मेरे प्रिय पुत्र! इंद्र बादलों का राजा है। वह अपनी पूजा के बदले हमें वर्षा देता है। वर्षा हम सबको जीवन देती है। पे पर फल लगते हैं और हर जगह हरी घास पैदा होती है। हमारी गायें खुशी से चारा खाती हैं और हमारी जिन्दगी हमारी गायों पर निर्भर है। इसलिए, लोग अपने द्वारा कमाए गए धन का हिस्सा इंद्र को वापिस देकर बलिदान द्वारा इंद्र की पूजा करते हैं।"

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, "पिताजी! हमारा धन और सम्पत्ति हमारे अपने पुरुषार्थ के कारण है। इंद्र इसमें कहां से आए? अगर हमें पूजा करनी है तो हमें गोवर्धन पर्वत की पूजा करनी चाहिए जहां हम रहते हैं, और जहां हमारी झोंपा यां हैं।"



नंद और दूसरे ग्वालों ने श्रीकृष्ण के कहने से अच्छे कपे पहन लिये और दूध, मक्खन और दही के बर्तन लेकर गोवर्धन पर्वत की पूजा शुरू कर दी। उन्होंने ब्राह्मणों और गोवर्धन पर्वत को गायें दान में दीं। ग्वालों का विश्वास पक्का करने के लिए श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत की चोटी को दिखाकर लोगों से कहा कि वे यह भोजन पर्वत को

समर्पित कर दें। फिर उन्होंने उस भोजन को खाना शुरू कर दिया जो कि पर्वत को समर्पित किए गए थे।



स्वर्ग के अधिपति इंद्र को यह सब देखकर बहुत ज्यादा गुस्सा आया। जब उसने देखा कि उसके लिए जो भेंट थीं, वे सब गोवर्धन पर्वत को दी जा रही हैं, तो वे वृंदावन के लोगों को सबक सिखाने का विचार करने लगे। इसलिए उन्होंने अपने बादल और वायु को उस ओर भेज दिया। बादल गरजने लगे और बहुत भारी वर्षा से फट गये। आसमान में लगातार बिजली चमक रही थी। घर और सूखी घास के ढेर हवा में उ ने लगे। उस वर्षा में पत्थरों के समान ओले बरस रहे थे। इस सबसे डर कर वृंदावन के लोग गुहार लगाने लगे, “हमें बचाओ श्रीकृष्ण, हमें अपनी शरण में ले लो।”

श्रीकृष्ण ने कहा, “डरो नहीं, तुम अपने पशुओं के साथ इस पर्वत के नीचे आ जाओ।” ऐसा कहकर उन्होंने ऊँचे पे॑ं के साथ गोवर्धन पर्वत को अपने सिर के ऊपर अपनी सबसे छोटी अंगुली पर बहुत आसानी से उठा लिया। वृंदावन निवासियों ने अपनी गायों के साथ उस पर्वत के नीचे आश्रय लिया। फिर लगातार सात दिन तक बारिश होती रही। श्रीकृष्ण बिना हिले लगातार सात दिन तक पर्वत को उठाये रहे। इंद्र बहुत

ज्यादा आशर्चय में पगए थे। उनका घमंड टूट गया था। उन्होंने बादल और वायु को वापिस बुला लिया।

गवाले अपनी गायों और अपनी निजी वस्तुओं के साथ ब्रज में चले गये। श्रीकृष्ण ने फिर से पर्वत को उसके सही स्थान पर रख दिया। नगरवासियों को यह सब देखकर बहुत हैरानी हुई। वे सभी नंदबाबा के पास आये और उनसे कहा, “आपके सात साल के पुत्र ने जिस तरह गोवर्धन पर्वत को धरती की जसे निकाल कर लगातार सात दिन तक अपनी एक अंगुली पर उठा लिया, उस तरह का अनोखा काम कोई साधारण आदमी नहीं कर सकता। आपका पुत्र सारे भगवानों का भी भगवान है। वह सारे सांसारिक जीवधारियों में अनोखा है।” उस दिन देवराज इंद्र और सुरभि स्वर्ग से नीचे उतर आये और श्रीकृष्ण के चरणों में गिर गये। उन्होंने अपने कार्यों के लिए श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी।



श्रीकृष्ण मथुरा में

जब श्रीकृष्ण बलराम के साथ मथुरा नगर पहुंचे, तो वहां शाम हो रही थी। वहां पर दूसरे गांवों से लोग उनसे मिलने को आये। नंद बाबा उनका मथुरा में इंतजार कर रहे थे। मथुरा में पहुंचने के बाद श्रीकृष्ण ने अपने रथ के सारथी अकूर को अपने घर जाने के लिए कहा। वे दोनों रथ से नीचे उतर कर नगर में धूमना चाहते थे, और कुछ समय बाद महल जाना चाहते थे। लेकिन अकूर उन्हें जाने नहीं देना चाहता था इसलिए उसने उनसे अपने घर चलने की विनती की और आराम करने को कहा।

अकूर ने जब उन्हें अपने घर चलने का निमंत्रण दिया तो श्रीकृष्ण ने कहा, “अकूर आज नहीं, आज हमें पहले कंस को मारना है और फिर हम तुम्हारे अतिथि सत्कार का आनंद लेंगे।” अकूर ने कंस को उनके आने का संदेश दिया और अपने घर चला गया।

अगले दिन वे अपने मित्रों के साथ मथुरा नगर देखने चल दिए। मथुरा नगर बहुत सुंदर था। घरों के बै-बै दरवाजे सोने और चांदी से बने हुए थे। वे बहुत सुंदरता से सजे थे। वहां बगीचे थे और सभी कों के किनारे की पट्टियाँ बहुत कारगरी से जो भी गई थीं। बरामदों और फर्श पर कीमती पत्थर जैसे हुए थे। वहां बगीचों में बहुत खूबसूरत फूल थे और उनके स्वागत के लिए जगह-जगह पर उन्हें बिखेरा गया था। नगर का वैभव चारों ओर दिख रहा था। औरतें उन्हें देखने के लिए चबूतरे पर इकट्ठी थीं और खिलियों से उनके आने पर फूल बरसा रही थीं।



नगर में धूमते हुए उन्होंने देखा कि एक धोबी अपने धुले हुए कपों के ढेर के साथ खा रहा था। श्रीकृष्ण ने उससे पूछा, “क्या तुम मुझे कुछ कप दोगे। हम तुम्हें इनाम देंगे।” धोबी ने उनके साथ बुरा व्यवहार करते हुए कहा, “तुम जंगली हो। क्या तुम जानते भी हो कि यह कप कैसे पहनते हैं? यह कप हमारे राजा कंस के हैं। वह तुम्हें मार देगा इसलिए तुम अभी भाग जाओ।”

उसके अपशब्द सुनकर श्रीकृष्ण ने अपनी बांहें फैलाई और उसके सिर पर थपथपाया। उनके ऐसा करने पर वह धोबी अपने कप ों की गठरी को जमीन पर रखकर डरकर भाग गया। श्रीकृष्ण और बलराम ने गठरी को खोला और उसमें रखे खूबसूरत और मंहगे कप े ले लिये। श्रीकृष्ण ने सुनहरे रंग के कप ों को चुना और बलराम ने नीले रंग के कप े को चुना और बाकी बचे हुए कप ों को उन्होंने अपने मित्रों में बांट दिया।

रास्ते में उन्हे एक फूलों की माला बनाने वाला मिला। वह श्रीकृष्ण और बलराम को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी फूलों की माला की टीकरी उनके आगे रख दी। श्रीकृष्ण ने वैजयंती माला चुनी और बलराम ने नीले कमलों की माला चुनी। उन्होंने माला बनाने वाले को उसके बदले में अच्छी सेहत और लंबे जीवन का दैवीय आशीर्वाद दिया।

उन्होंने एक विजयी की तरह नगर में अपनी यात्रा आरम्भ रखी। तभी उन्होंने एक सुंदर चेहरे वाली स्त्री को देखा जिसका शरीर तीन ओर से मु । हुआ था। उसे देखकर श्रीकृष्ण ने कहा, “देवी तुम कौन हो और तुमने अपने हाथों में चन्दन क्यों पक रखा है?”



अगर तुम मादक सुगंध वाला चंदन हमें दे दो तो हम तुम्हें उसके बदले में उसके बराबर मूल्य देंगे। उस स्त्री ने श्रीकृष्ण को देखा और कहा, “अरे ओ सुंदर युवक मैं यह सुगंधित चंदन कंस के लिए ले जा रही थी पर इसके लिए तो तुम दौनों ही ज्यादा योग्य हो। मैं तुम्हें यह जरूर दूंगी।” श्रीकृष्ण उसके प्रेम और भक्ति को देखकर बहुत खुश हो गए। उन्होंने फैसला किया कि वे उसके शरीर के झुकाव को खत्म कर देंगे

और उसे सीधा खा कर देंगे। इसलिए उन्होंने अपने पैर की अंगुलियां उसके पैर पर रखी और अपनी दो अंगुलियों से उसकी री की हड्डी ऊपर उठाई। उसी समय उसका सारा शरीर सीधा हो गया और वह एक सुंदर स्त्री में बदल गई। वह बहुत ज्यादा खुश हो गई और उनके पैरों में गिर कर उनसे अपने घर में ठहरने की विनती करने लगी। श्रीकृष्ण ने कहा, “अभी हमें और दूसरा काम पूरा करना है। पर हम जरूर आयेंगे। फिर वे अपने मित्रों के साथ आगे चल दिये।”



कंस का वध

श्रीकृष्ण, बलराम और उनके मित्र घूमते-घूमते उस जगह पहुंचे जहां एक भी धर्नुयज्ञ में शामिल होने आई थी। कंस ने भगवान् शिव का एक बहुत बड़ा धनुष लोगों द्वारा पूजा करने के लिए रखा था। श्रीकृष्ण ने उस मजबूत धनुष को उठाया और उसकी डौरी को बांधकर उसे खींचा, तो वह धनुष एक जोरदार आवाज के साथ दो हिस्सों में टूट गया। जो सिपाही धनुष की रक्षा कर रहे थे, वे अपने हथियारों के साथ श्रीकृष्ण की ओर भागे। पर श्रीकृष्ण और उनके मित्रों ने आसानी से उनको हरा दिया। सिपाही उनको बंधक बनाना चाहते थे पर वे आसानी से बच निकले। उन्होंने वह जगह छोड़ी और आगे शहर देखने चल पड़े।

अगली सुबह कंस ने नियमित ढंग से कुश्ती की घोषणा की। शहरवासियों ने स्वागत किया और अखा॑ के बरामदे में बैठ गये। कंस अखा॑ में सबसे ऊँची जगह पर बैठा था। ढोल बजने शुरू हुए। कंस के दो पहलवान चांडुर और मुष्ठिक के अलावा और पहलवान भी अखा॑ में थे। जब श्रीकृष्ण और बलराम अखा॑ के दरवाजे पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि कूवलयपी नाम का एक बहुत बड़ा हाथी अपने महावत के साथ उनका रास्ता रोककर खड़ा था। उन्होंने महावत से रास्ता देने की विनती की मगर वह नहीं माना। महावत बहुत गुस्से में था और उसने श्रीकृष्ण को मारने के लिए हाथी को उकसाया। श्रीकृष्ण तैयार थे इसलिए वे तुरन्त कुछ कदम पीछे हट गए। लेकिन हाथी एकदम से घूमा और उसने श्रीकृष्ण को अपनी सूँड पर उठा लिया श्रीकृष्ण आसानी से नीचे फिसल गये और हाथी के पेट के नीचे छिप कर उन्होंने उसकी पूँछ पकड़ ली। उन्होंने हाथी की पूँछ उसी तरह से खींचनी शुरू की जैसे खेल-खेल में कोई बच्चा बछड़ की पूँछ खींचता है। इसके बाद अचानक वे भागकर हाथी के आगे आ गये और ध्ररती पर गिरने का बहाना करने लगे। हाथी जो श्रीकृष्ण को धरती पर गिरा समझ कर अपने नुकीले दांतों से वार करने के लिए भागा चला आ रहा था उसे श्रीकृष्ण ने मारने के लिए उसके दांतों को पकड़ लिया, लेकिन वह अपने दांतों को छुट्टा नहीं पाया। श्रीकृष्ण ने पहले ही उसकी सूँड को अपने हाथों में ढबोच लिया और उसे उसके शरीर से अलग कर दिया। हाथी मरकर नीचे गिर गया। श्रीकृष्ण ने अपने कंधों पर एक दांत रखा और दूसरे को बलराम के कंधों पर रखा। फिर दोनों ने कुश्ती के अखा॑ में प्रवेश किया।



अखाे में बैठे हुए लोग ऐसे साहसी युवकों को देखकर खुश हो रहे थे और उनके लिए प्रार्थना कर रहे थे। चांदुर और मुष्टिक उनकी प्रतीक्षा में थे। चांदुर ने कहा, "हमने सुना है कि तुम दोनों ब् अच्छे पहलवान हो। चलो आज अपनी कुश्ती से राजा कंस को भी प्रसन्न कर दो।" श्रीकृष्ण ने चांदुर को छे ने के लिए कहा " हम तो आपसे बहुत अधिक छोटे हैं हम आपसे कैसे ल सकते हैं। आपको तो अपनी उम्र के लोगों के साथ ल ना चाहिए।" चांदुर ने जवाब दिया, "क्या अभी-अभी तुमने एक ताकतवर हाथी को नहीं मारा है? अब हमसे डरो नहीं। आओ चलो हमसे कुश्ती करो।" कुश्ती शुरू हुई और चांदुर श्रीकृष्ण से ल ने लगा और मुष्टिका बलराम से।



अखाे में बैठी स्त्रियां श्रीकृष्ण और बलराम को अपनी उम्र से बहुत बे पहलवानों के साथ कुश्ती करता देखकर अचेत होने लगी। वासुदेव और देवकी भी वहां पर उपस्थित थे। अचानक उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने शत्रुओं को जमीन पर गिरा दिया और उनके ऊपर बड़ी जोर से घूंसे मारने लगे। चांडुर और मुष्ठिका में अब और ज्यादा ल ने की शक्ति नहीं रह गई थी। अंत समय निकट आने

पर अपनी आंखें बंदकर वे दोनों मर गए। तब उन दोनों के भाई भी ल ने के लिए अखा́ में आ गए, पर श्रीकृष्ण और बलराम ने उन्हें भी मार दिया। श्रीकृष्ण अपने सारे ग्वाल मित्रों को अखा́ में ले आए और वे सब मिल कर नाचने लगे और विजय के गीत गाने लगे। कंस बहुत गुस्से में था। उसने ढोल बजाने से रोक दिया और सैनिकों को वासुदेव और देवकी का वध करने को कहा।

श्रीकृष्ण छलांग लगाकर सिंहासन के पास पहुंच गये जहां कंस बैठा हुआ था। कंस ने कृष्ण को मारने के लिए अपनी तलवार उठाई, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। कृष्ण ने कंस को अपने हाथों मे उठाकर नीचे फेंक दिया। जब वह अखा́ की जमीन पर जा गिरा, तब श्रीकृष्ण अपने सारे संसार के भार के साथ उसकी छाती पर ख हो गये। कंस की मृत्यु हो गयी। उसने श्रीकृष्ण को उनके दैविक रूप में देखा। देखने वालों ने एक अदूभुत दृश्य देखा कि कंस के शरीर से अद्वितीय चमक पैदा हुई और श्रीकृष्ण में दाखिल हो गई। कंस ने मूक्ति प्राप्त कर ली। उसके बाद मथुरा में शांति स्थापित करके कृष्ण और बलराम संदीपनी मुनि के आश्रम के लिए चल दिए।

कहानियों हारा बच्चों का बीमिक और चारित्रिक निर्माण हो यही इस पुस्तक की प्रेरणाप्रोत है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में दादा—दादी, नाना—नानी बच्चों का कहानियों के माध्यम से चारित्रिक, संस्कारिक निर्माण करते थे। परंतु आजकल एकल परिवार समय के अभाव में आगे दायित्वों से विनृख हो रहे हैं।

इसारे प्रकाशन का प्रयास है कि अभिभावक अपने बच्चों को सुसंस्कारित, तरित्वगान और गोग्ग नागरिक बना सके एवं बच्चे भी इस पुस्तक को पढ़कर लाभान्वित हों।

इस पुस्तक में श्रीकृष्ण की सुंदर सवित्र कहानियों को संग्रहित किया गया है। यह सभी कहानिया कृष्ण के जीवन से सबनिष्ठत हैं। इन कहानियों में श्रीकृष्ण का जन्म, लालन—पालन, नटखट स्वभाव से लेकर राजा बनने तक का सवित्र बर्णन है।

ISBN: 978-93-8093-921-6

CHILDREN

₹ 30

www.maplepress.com

maple press

MAPLE PRESS